अनुमान (Inference) Date

BAI Hons 2 BAI (Sub)

Q. न्याय के अनुसार अनुमान की व्याख्या करें।

Ans- न्याय दर्शन में न्यायसूत्र के अनुसार ज्ञान की प्राप्ति के साधन के रूप में प्रत्यक्ष के अनुमान की चर्चा की गई है। अनुमान ज्ञान प्राप्ति का दूसरा साधन है जो दो शब्दों के योग से बना है अनुमान अनु + मान। अनु का अर्थ पश्चात होता है तथा मान का ज्ञान। यौगिक अर्थ में पश्चात् ज्ञान को अनुमान कहा जाता है अर्थात् अनुमान का अर्थ वह ज्ञान से है जो एक ज्ञान के बाद आता है। प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर ही अप्रत्यक्ष के बारे में ज्ञान प्राप्त करना अनुमान कहलाता है। इसलिए न्याय दर्शन के प्रणेता महर्षि गौतम ने अनुमान को प्रत्यक्षपूर्वक कहा है। यद्यपि प्रत्यक्ष और अनुमान दोनों को प्रमाण माना जाता है फिर भी दोनों में अन्तर भी है, वात्स्यायन का कहना है कि प्रत्यक्ष के अभाव किसी भी वस्तु के बारे में अनुमान नहीं किया जा सकता। पाश्चात्य विचारकों ने स्वीकार किया है कि ज्ञात के आधार पर अज्ञात के बारे में ज्ञान प्राप्त करना ही अनुमान कहलाता है।

कभी-कभी वात्स्यायन ने प्रत्यक्ष के अलावा आप्त को भी अनुमान का आकस्मिक आधार माना है। आप्त को शब्द प्रमाण भी कहा जाता है, इनके शब्दों में प्रत्यक्ष या आप्त (शब्द प्रमाण) पर आधारित ज्ञान ही अनुमान है।

अनुमान की सरल परिभाषा के रूप में कहा जा सकता है कि अनुमान बुद्धि की वह प्रक्रिया है जिसमें किसी वस्तु के ज्ञान के आधार पर किसी दूसरे वस्तु का ज्ञान प्राप्त किया जाता है क्योंकि उस वस्तु के बीच व्याप्ति संबंध पाया जाता है, धुएँ (प्रत्यक्ष) के आधार पर अग्नि (अप्रत्यक्ष) का ज्ञान प्राप्त करना ही अनुमान है, यहाँ पर धुएँ और अग्नि के बीच व्याप्ति संबंध है,

अनुमान में तीन पद उपस्थित रहते हैं।

MICO LUBRICANTS

P.T.O

(1) हेतु या वस्तु (2) साध्य (Major term) (3) पक्ष (Minor term) । उदाहरण - जहाँ-जहाँ धुआँ है वहाँ-वहाँ आग है, यहाँ धुआँ हेतु या वस्तु है, आग साध्य है और वहाँ-वहाँ पक्ष है। साध्य उसे कहा जाता है जिसे प्रमाणित करना होता है। साध्य को जिसके माध्यम से सिद्ध किया जाता है उसे पक्ष कहा जाता है। जिसके द्वारा पक्ष और साध्य में संबंध स्थापित किया जाए उसे वस्तु या हेतु कहा जाता है। व्याप्ति के तीनों पद को क्रमशः बृहत्पद (Major term), लघु पद (Minor term) और मध्यवर्ती पद (Middle term) कहा जाता है।

प्रत्यक्ष और अनुमान में अन्तर (Distinction between Perception and Inference)

व्यावहारिक में प्रत्यक्ष और अनुमान दोनों ही ज्ञानप्राप्ति के महत्वपूर्ण साधन हैं फिर भी दोनों में अन्तर निम्न प्रकार है।

(i) व्यावहारिक में प्रत्यक्ष को सर्वप्रथम अनुमान माना गया है तथा अनुमान को द्वितीय प्रमाण के रूप में।

(ii) प्रत्यक्ष स्वयं मूलक है यह अपनी उत्पत्ति के लिए दूसरे पर आश्रित नहीं रहता परन्तु अनुमान अपनी उत्पत्ति के लिए प्रत्यक्ष पर आश्रित है।

(iii) प्रत्यक्ष आत्म निर्भर होने के कारण साक्षात् ज्ञान (Immediate Knowledge) है किन्तु अनुमान प्रत्यक्ष पर निर्भर होने के कारण परोक्ष ज्ञान (Mediate Knowledge) है।

(iv) प्रत्यक्ष ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त होता है इसमें सिर्फ वर्तमान का ज्ञान प्राप्त होता है परन्तु अनुमान द्वारा तीनों काल (भूत, वर्तमान तथा भविष्य) के पदार्थों का ज्ञान प्राप्त होता है। इसी तरह अनुमान के अनेकों अन्तर हो सकते हैं।

MICO LUBRICANTS

अनुमान का प्रकार

न्याय दर्शन में तीन प्रकार के अनुमान — न्याय का वर्गीकरण किया गया है।

1. प्रयोजन की दृष्टि से — प्रयोजन की दृष्टि से अनुमान के दो प्रकार होते हैं — स्वार्थानुमान और दूसरा परार्थानुमान। जो अनुमान दूसरों को समझाने हेतु किया जाता है उसे परार्थानुमान कहा जाता है। इसमें तीन वाक्य होते हैं — निगमन, हेतु एवं व्याप्ति वाक्य। जैसे — राम मरणशील है, क्योंकि वह मनुष्य है। सभी मनुष्य मरणशील हैं।

जो अनुमान दूसरों को समझाने के लिए किया जाए उसे परार्थानुमान कहा जाता है। इसे पंचावयव न्याय (Five membered syllogism) कहा जाता है, जैसे —

राम मरणशील है — प्रतिज्ञा
क्योंकि वह एक मनुष्य है — हेतु
सभी मनुष्य मरणशील हैं —
राम भी एक मनुष्य है — उपनय
इसलिए राम मरणशील है — निगमन

प्राचीन भारतीय तर्कशास्त्र के अनुसार न्याय दो प्रकार के होते हैं — पूर्ववत् और अनुवत्। पूर्ववत् (antecedent) में पूर्व के आधार पर पश्चात् के बारे में ज्ञान प्राप्त करना पूर्ववत् अनुमान कहलाता है। अनुवत् अनुमान में ज्ञान के आधार पर अनुवाद (कारण) का ज्ञान प्राप्त ~~करना अनुवत्~~ किया जाता है, जैसे — पानी को देखकर यह में वर्षा होने का अनुमान किया जाता है।

तर्कशास्त्र के अनुसार केवलान्वयी अनुमान, अन्वय व्यतिरेकी अनुमान तथा केवल व्यतिरेकी अनुमान। इन तीनों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है।

आवश्यक उदाहरण के आधार पर स्थापित व्याप्ति को केवलान्वयी अनुमान कहा जाता है। केवल निषेधात्मक उदाहरणों के आधार ज्ञान प्राप्त करना केवल व्यतिरेकी अनुमान कहलाता है तथा उभय व्याप्ति की स्थापना उपयुक्त होती।

अनुमान की सहायता से होता है इसे अन्वय व्यतिरेकी अनुमान कहा जाता है।

END

MICO LUBRICANTS